

## 2036 - मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ऊँचा पदा क्या है ?

### प्रश्न

मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ऊँचे पद को जानने की इच्छा रखता हूँ।

### विस्तृत उत्तर

अज्ञान सुनने वाले व्यक्ति के लिए धर्मसंगत है कि मुअज्जिन का अनुसरण करे अर्थात् मुअज्जिन के शब्दों को उसके पीछे दोहराए, संपूर्ण अज्ञान में उसका अनुसरण करने के बाद अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम भेजे, फिर उस के बाद वह दुआ पढ़े जो सही हदीस में जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

"जिस आदमी ने अज्ञान सुनकर यह दुआ पढ़ी :

اللَّهُمَّ رَبِّ هَذِهِ الدُّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلَاةِ الْقَائِمَةِ أَتِ مُحَمَّدًا الْوَسِيلَةُ وَإِنَّهُ مَقَامًا مَخْفُودًا لِّذِي وَعْدَتْهُ.

"अल्लाहुम्मा रब्बा हाज़ेहिदा'वतित्ताम्मह वस्सलातिल काईमह आति मुहम्मद-निल वसीलता वल फज़ीलता वब्-अस्हु मकामन महूदा अल्लज़ी व-अदतह"

तो उसके लिए क्रियामत के दिन मेरी शफाअत (सिफारिश) पक्की होगयी।" इसे बुखारी (हदीस संख्या : 589)ने रिवायत किया है।

और दुआ में "अद्वरजतल आलियता अर्फीअता" ال درجة العالية الرفيعة का शब्द नहीं है, अतः उसे नहीं पढ़ा जायेगा।

तथा आप के फरमान "अल-वसीलता वल फज़ीलता" مें الوسيلة والفضيلة अत्फ, बयान अर्थात् तफ्सीर (व्याख्या) के लिए है। वसीला एक सारे लोगों से बढ़कर एक अतिरिक्त पद और स्थान है जिसकी व्याख्या नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस हदीस में की है जिसे अबदुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने की है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुए सुना: "जब तुम मुअज्जिन को अज्ञान कहते हुए सुनो तो उसी तरह कहो जित तरह वह कहता है। फिर मेरे ऊपर दुरूद भेजो, क्योंकि जिसने मेरे ऊपर एक दुरूद भेजी अल्लाह उसके बदले उस पर दस रहमतें भेजेगा। फिर मेरे लिए अल्लाह से वसीला मांगो। क्योंकि यह स्वर्ग में एक स्थान है जो अल्लाह के किसी बंदे के लिए ही उचित है और मुझे आशा है कि वह मैं ही हूँ। अतः जिसने मेरे लिए वसीला मांगा उसके लिए मेरी शफाअत पक्की होगई। इसे मुस्लिम (हदीस संख्या: 577) ने रिवायत किया है।

मकामे महमूद से मुराद वह महान शफाअत है जो आप अल्लाह के पास लेगों के बीच फैसला के लिए करेंगे, और इस सिफारिश की अनुमति मात्र मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ही मिलेगी, और यही अल्लाह के इस फरमान में वर्णित है जिसमें अल्लाह ने

अपने पैगंबर को संबोधित करते हुए फरमाया:

أَقِمِ الصَّلَاةَ لِدُلُوكِ الشَّمْسِ إِلَى عَسَقِ الْلَّيْلِ وَقُرْءَانِ الْفَجْرِ إِنْ قُرْءَانَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا (78) وَمِنَ اللَّيْلِ فَتَهَجَّذْ بِهِ نَافِلَةً لَكَ (79). {عَسَنَ أَنْ يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَحْمُودًا}

### سورة الإسراء

"नमाज़ को क्रायम करें सूरज के ढलने से लेकर रात के अंधेरे तक, और फज्ज का कुरआन पढ़ना भी, निः संदेह फज्ज के समय कुरआन का पढ़ना हाजिर किया गया है। तथा रात के कुछ हिस्से में तहज्जुद की नमाज़ में कुरआन का पाठ करें, यह वृद्धि आपके लिए है, निकट ही आपका पालनहार आपको मक्कामे महमूद में खड़ा करेगा।" (सूरतुल इसाः 78 - 79)

और इस सिफारिश का नाम "मक्कामे महमूद" इसलिए रखा गया है कि सारी मानव जाति उस मक्काम पर आपकी प्रशंसा कर रही होगी। क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सिफारिश के कारण उन्हें मैदाने मह्शर की परेशानी और बिपदा से मुक्ति मिल जायेगी और उस भयंकर दृश्य से निकलकर हिसाब व किताब और लोगों के बीच फैसला की शुरूआत हो जायेगी। और अल्लाह तआला ही सर्वश्रेष्ठ ज्ञान रखता है।